ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

कोविड-19 का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव

Effects of Covid- 19 on Society

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 28/11/2020, Date of Publication: 29/11/2020

विजय कुमार मीना
सहायक आचार्य,
रसायनशास्त्र विभाग,
श्री संत सुन्दरदास राजकीय महिला महाविधालय,
दौसा, राजस्थान, भारत

बृजमोहन मीना
सहायक आचार्य,
प्राणी शास्त्र विभाग,
राज. महाविद्यालय,
बांदीकुई, दौसा,
राजस्थान, भारत

सारांश

वर्तमान में भारत समेत पूरी दुनिया कोरोना वायरस महामारी विनाशकारी भयंकर संकट से जूझ रही है चीन से उत्पन्न हुई इस बीमारी ने अपनी आगोश में सारी दुनियाँ को समेट लिया जिसका प्रभाव लगभग सभी पर दिखाई दे रहा है । न्यूज चौनलों व समाचार पत्रों से प्राप्त अस्पष्ट सूचनाओं के अतिरिक्त अभी तक इस बीमारी का कोई वैक्सीन या टीका बनने की कोई विश्वसनीय सूचना नहीं मिली है । दुनिया भर के डॉक्टर और वैज्ञानिक इस बीमारी के इलाज के प्रयास में लगे हुए हैं । इस बीमारी के इलाज के बारे में सिर्फ इतना ही कहा जाता है कि 'सोशल डिस्टेंस' ही एकमात्र बचाव है । इस हेतु दुनियां भर के देशों में लॉकडाउन प्रारम्भ किये है तथा काफी हद तक इस महामारी से बचने की कोशिश की जा रही है । दुनिया के दूसरे देशों से सबक लेते हुए भारत सरकार ने भी देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की है तथा इस महामारी से बचाव के लिए जनचेतना जाग्रत करने के प्रायस किये जा रहे है ।

Currently, the whole world including India is suffering from the devastating crisis of corona virus epidemic, this disease originated from China, which has covered the whole world in its wake, whose impact is visible on almost everyone. Apart from the ambiguous information received from news channels and newspapers, no reliable information has yet been made about the vaccine or vaccine formulation of the disease. Doctors and scientists from all over the world are engaged in the treatment of this disease. It is said that treatment of this disease is the only prevention of psychological distress. For this, lockdowns have been started in countries all over the world and efforts are being made to avoid this epidemic to a large extent. Taking lessons from other countries of the world, the Government of India has also announced a nationwide lockdown and public awareness is being made to prevent this epidemic.

मुख्य शब्द : कोरोना वायरस, अर्थव्यवस्था, महामारी, सामाजिक प्रभाव, सोशल डिस्टेंसिंग।

Corona Virus, Economy, Epidemic, Social Impact, Social Distancing.

प्रस्तावना

कोरोना वायरस कई प्रकार के विषाणुओं का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। यह आरएनए वायरस होते हैं । इनके कारण मानव में श्वास तंत्र में संक्रमण पैदा हो सकता है जिसकी गहनता हल्की सर्दी –जुकाम से लेकर अति गंभीर मृत्यु तक पहुंच सकती है । गाय और सूअर में इसके कारण अतिसार हो सकता है जबकि इसके कारण मुर्गियों के ऊपरी श्वास तंत्र के रोग उत्पन्न हो सकते हैं । इसकी रोकथाम के लिए कोई टीका या विषाणुरोधी अभी उपलब्ध नहीं है और उपचार के लिए प्राणी की अपने प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है । अभी तक रोग लक्षणों का उपचार किया जाता है ताकि संक्रमण से लड़ते हुए शरीर की शक्ति बनी रहे । चीन के वुहान शहर से उत्पन्न होने वाला 2019 नोवल कोरोनावायरस इसी समूह के वायरसों का एक उदाहरण है , जिसका संक्रमण सन् 2019–20 काल में तेजी से उभर कर 2019–20 वुहान कोरोना वायरस के प्रकोप के रूप में फैलता जा रहा है । हाल ही में who ने इसका नाम COVID–19 रखा ।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र में कोरोनावायरस से उत्पन्न दुष्प्रभाव एवं सामाजिक स्तर पर होने वाले नुकसान को आम आदमी तक पहुंचाना और मनुष्य के जीवन में पढ़ने वाले सामाजिक प्रभाव को समझाने का प्रयास किया गया है इस प्रकार के

लेख आम आदमी को जागरूक करने में सहायक होंगे और एक नई जागृति पैदा करने में अपनी भूमिका निभाएंगे ऐसी उम्मीद है और विश्वास है ।

मानव समुदाय इस महामारी से इस प्रकार भयभीत हो गया है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका भय और आतंक छा गया है तथा बहस का केन्द्र बन गया है । चाहे टेलीविजन हो या सोशल मीडिया हर जगह कोरोना ही कोराना चर्चा का विषय बन गया है । इस महामारी के कारण दुनिया की एक दूसरे संग मजबूती से जुड़ी प्रणालियां बदल गई है । इस वायरस के प्रकोप को काबू करने के प्रयास के तौर पर सामाजिक मेल–जोल पर बंदिशें लगा दी गई है । इससे दुनिया की एक तिहाई से अधिक आबादी अपने घरों में बंद रहने को मजबूर है । लॉक डाउन की वजह से दुनिया के अधिकांश हिस्सों में सीमाएं बंद है , हवाई अड्डे, होटल , शैक्षणिक संस्थानों समेत तमाम व्यवसाय बंद है । लॉकडाउन जैसे अभूतपूर्व कदम इस महामारी से बचाव के लिए अपनाये जा रहे है परन्तु यह तो स्पष्ट हो गया है कि कुदरत /प्रकृति नियति का निर्धारण करती है ।

लोगों को इस महामारी से भविष्य में होने वाले दुष्प्रभावों, संकटो के बारे में जानकारी नहीं है कि वह किस रूप में सामने आएगा । परंतु आज की सर्वोच्च प्राथमिकता जीवन बचाना है । यह सही है कि जान है तो जहान है और जीवन बचाने का यह उद्देश्य भविष्य की सफलता है । लेकिन भविष्य में सफल होने के लिए दुनिया भर के देशों को इसके लिए योजना बनानी होगी ।

हमें आज द्वितीय विश्वयुद्ध के संदर्भ समझ में आते हैं , लेकिन अगर कोरोना वायरस एक युद्ध है तो उस वायरस से लड़ा नहीं जा सकता और न ही उसे मारा जा सकता है । युद्ध काल के दौरान शत्रु अक्सर अप्रत्याशित होते हैं , लेकिन वे शायद ही कभी अदृश्य होते हैं । फिर भी किसी युद्ध में अगर विजय हासिल करना हो तो विवेकपूर्ण योजना बनाना जरूरी होती है । इसी प्रकार इस कोरोना रूपी अदृश्य शत्रु को परास्त करने के लिए सिर्फ सरकारों को ही नहीं प्रत्येक जनमानस को जागृत होकर इससे बचने के लिए प्रयास करने होंगे ।

विभीषकाएं चाहे युद्ध की हो या कोई महामारी की मानव जीवन को , उसके भविष्य को प्रभावित कर उसमें परिवर्तन कर देती है । जिस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पुरुषों की कमी ने स्त्रियों के विकास का मार्ग खोल दिया था । युद्ध के बाद नारी सशक्त होकर सामने आयी जोकि बिना युद्ध की परिस्थिति के सम्भव नहीं था । ठीक इसी प्रकार वैश्वकि महामारियां विश्व को एक नई दिशा में मोड़ती है जिसके उपरान्त विशाल जनसमूदाय का जीवन पुनः पहले जैसी स्थिति को प्राप्त नहीं कर पाता है ।

वर्तमान समय में कोरोना एक वैश्विक महामारी का रूप धारण कर जनमानस को,उसके स्वास्थ्य को, जीवन शैलीको, प्रभावित कर रही है जो निश्चित रूप से अल्पकालिन और दीर्घकालिन प्रभाव छोड़ कर बड़ा परिवर्तन ला देगी । लगता है कुछ लोगों का जीवन तो सदैव के लिए ही बदल जायेगा । यह महामारी जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर रही है । दुनिया भर के देशों में मानवीय अधिकारों को सीमित कर दिया है । इसके सकारात्मक परिणाम सामने आये महामारी पर काफी मात्रा में नियन्त्रण हो सका ,परन्तु लॉक डाउन से उत्पन्न आर्थिक मंदी की स्थिति डिप्रेशन , आत्महत्या , तनाव , चिडचिड़ापन आदि बनेगा तथा लोगों का जीवन सदैव के लिए बदल जायेगा ।

हमारी अर्थव्यवस्था एक सुखद और निश्चित भविष्य की उम्मीद पर टिकी है । जब यह भविष्य की उम्मीद संकट में आती है अर्थव्यवस्था भी संकट में आ जाती है । ऐसा प्रतीत होता है कोई बुलबुला अचानक फूट गया हो और सब कुछ जैसे समाप्त हो गया हो । कोरोना ने एक ही दिन में मानव मन व उसके जीवन के बारे में बहुत कुछ दिखाया । लोग एक ही दिन में अचानक राशन की दुकानों पर उमड़ पड़े सब कुछ खरीदने की होड़ में मॉल, दुकाने खाली कर दी और कालाबाजारी को जगह दी । यह दिखाता है कि हम अन्दर से कितने असुरक्षित और आत्मकेन्द्रित है । किसी भी तरह से मैं और मेरा परिवार जिन्दा रहे ,सुख से रहे परोपकार के लिए सोशल मीडिया है ही, यही भावना हमारे व्यवहार में दिखाई दी ।

यह तय है कि एक सीमा के बाद व्यक्ति परिवार की भी बलि चढ़ाकर स्वयं को बचाएगा । इटली के उदाहरण ने यह सिद्ध किया है । इटली में अस्पतालों में भीड़ हो जाने के बाद जब अस्पतालों ने और मरीजों को लेने से इन्कार कर दिया तो उन मरीजों को अपने परिवार में भी रहने को जगह नहीं दी गई एवं उन्हें सड़को या बाहर कहीं भी मरने को छोड़ दिया गया ।

कोराना वायरस लोगों को नजदीक भी लाया है । इसने जीवन की अनिश्चितता को एक ही बार में समझा दिया है । सारी योजनाएँ स्थगित हो गई है और अचानक से समझ आ गया है कि क्या– क्या जरूरी है और क्या–क्या गैर जरूरी है । अखबारों की खबरों से जानकारी मिलती है कि जो पडौसी वर्षों से आपस में बात नहीं कर रहे थे वे कोरोना की वजह से एक दूसरे के नजदीक आ गये है और एक दूसरे का सहयोग कर रहे है ।

लगातार चौबीस घण्टे घर के अन्दर ही रहने से कई परिवार के सदस्यों में तनाव और चिडचिडापन बढ़ गया है । निरन्तर बढ़ता यह तनाव कई घरों में गम्भीर समस्याए पैदा कर सकता है । कई लागों में प्रेम सम्बन्ध प्रभावित होंगे तो कुछ के नये प्रेम सम्बन्ध भी बनेंगे । इस तरह कोरोना हमारी सामाजिक व्यवस्था को बदल रहा है जो निम्न बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता है: –

कोरोना का सबसे गम्भीर सामाजिक प्रभाव उन समुदायों पर देखने को मिलेगा जो आर्थिक दृष्टि से बेहद पिछड़े हुये है । मसलन घुमन्तू समुदाय के लोग, दिहाड़ी मजदूर, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले कामगार इत्यादि । इन समुदायों पर इस महामारी का दोहरा प्रभाव देखने को मिल सकता है । रोजगार चले जाने के कारण

उनकी आय शुन्य हो जाने से आर्थिक स्थिति चरमरा गयी । तथा किसी भी प्रकार की बचत न होने के कारण परिवार का भरण पोषण न कर पाने के दबाव के कारण पारिवारिक कलह उत्पन्न हो गये ।

कोरोनावायरस जैसी महामारी ने समाज को नाटकीय तरीके से बदतर बना दिया है और भविष्य में और भी बदतर बनाएगी । यह महामारी स्थायी तरीकों से समाज को नयी आकृति प्रदान करेगी और लोगों के यात्रा करने , घर खरीदने , सुरक्षा एवं निगरानी तथा यहां तक की भाषा के प्रयोग के तौर –तरीकों के बारे में बदलाव आएगा ।

व्यक्ति खतरनाक बन गया है और आने वाले समय में और भी खतरनाक बनता जाएगा । हम सबको अपने अपने घरों में बंद रखने वाला यह वायरस जो सरकार के साथ बाहर की दुनिया के साथ और यहां तक कि एक दूसरे के साथ हमारे संबंधों को बदल रहा है हो सकता है कि यह महीनों तक रहे । आने वाले महीनों और सालों के दौरान हम जो परिवर्तन महसूस करेंगे उनसे हम अपरिचित हो सकते हैं और ये परिवर्तन हमारे लिए मुश्किल हो सकते हैं । हमारे सामने वर्तमान में अनेक प्रश्न है । क्या विभिन्न देश बंद रहेंगे ? क्या स्पर्श वर्जित हो जाएगा ? रेस्तंराओं और यात्राओं का क्या होगा ? स्वास्थ्य क्लबों में किस व्यवहार का प्रदर्शन किया जाएगा ? वैसे रेस्तरां स्थाई तौर पर बंद हो सकते हैं जहां लोग बैठकर खाना खाते हैं क्योंकि वहां कम संख्या में लोग जाएंगे । यह संभव है कि दुनिया भर में ऐसे रेस्तंरा कम हो जाएंगे ।

हम भली बातें इस बात से परिचित हैं कि विभिन्न प्रकार की चीजों को छूना , दूसरे लोगों से मिलना –जुलना और बंद जगह की हवा में सांस लेना सर्वाधिक खतरनाक हो सकता है । हाथ मिलाने या हमारे चेहरे को छूने से हम परहेज करने लग सकते हैं और बार –बार हाथ धोने की प्रवृत्ति विकसित हो सकती है । दूसरे लोगों की उपस्थिति के कारण हमने जो राहत या आनंद का अहसास होता था अब हो सकता है कि लोगों के आसपास नहीं होने से हमें अधिक राहत मिले , खास कर वैसे लोगों से जिन्हें हम नहीं जानते है । लोग भीड़ पर अविश्वास करेंगे । सामाजिक मेल –मिलाप सीमित होंगे और आने वाले समय में हम कार्यस्थल पर , स्कूलों में , कॉलेजों में , दफ्तरों में , रेल्वे स्टेशनों पर , बस अड्डों पर, सार्वजनिक जगहों पर किस तरह व्यवहार करेंगे और यहां तक कि बच्चे मिलकर कैसे खेलेंगे यह आने वाले समय में अलग होगा । कोरोना वायरस के कारण सामाजिक ताने–बाने में जो दरारें आएंगी उन्हें दूर किया जा सकेगा । भविष्य अनेकानेक सवालों को हमारे मनोमस्तिष्क में उद्वेलित करेगा । क्या आने वाले समय में हमें हाथ मिलाना चाहिए , क्या हमारी यात्रा सुरक्षित होगी ,क्या हम छुटिटयां मनाने जा सकेंगे ?

कोरोना महामारी के कारण मनुष्य का जीवन भविष्य में भिन्न प्रकार का मिलेगा । मनुष्य के जीवन में बहुत कुछ आदतन होता हैं और यह आदत ही मनुष्य को उसके रहने , उसके बैठने में , उसकी रोजमर्रा की दिनचर्या में , उसके काम करने , उसकी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों की देखभाल करने और अपने लक्ष्य को अर्जित करने में काफी प्रभावित करती हैं और मदद करती है । इस महामारी के कारण इस व्यवस्था को बड़ा झटका लगता है तो हमारी आदतें बदलेगी , लोगों के काम करने , उनके रहन–सहन के तरीके , आने –जाने के तरीके बदल जायेंगे । रोजमर्रा की जीवनचर्या परिवर्तित हो जायेगी ,जीवनशैली में परिवर्तन होगा , खाने–पीने और अपने परिवार के साथ संवाद करने के तरीके बदल जायेंगे । जब लोग चीजों को अलग तरीके से करने को मजबूर होते हैं तो नयी आदते जन्म लेने लगती है ।

स्त्रियों की स्थिति के बारे में देखा जाये तो लॉकडाउन में बच्चे, बुजुर्ग, व्यस्क सभी अपने–अपने घरों में कैद है तो न चाहते हुये भी इस महामारी के दौरान महिलाओं के घर के कामों में अनावश्यक रूप से वृद्धि हुई है । परिवार के रुबह से रात तक की जरूरतो को पूरा करने की जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई । परिणामस्वरूप उन्हें मानसिक दबाव का सामना करना पड़ा जिससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव सामने आये ।

कोरोना महामारी के कारण नस्लभेदी प्रभाव उत्पन्न हो गया । यह महामारी चीन से उत्पन्न हुई है इसलिए कुछ वर्षों तक चीनी नागरिको को इस महामारी के कारण जाना पहचाना जायेगा तथा नफरत की दृष्टि से देखा जा सकता है । अन्य देशों के लोगों द्वारा उन पर ना केवल नस्लभेदी टिप्पणी की जा सकती है ,बल्कि उन्हें उपेक्षा का शिकार भी होना पड़ सकता है । भारत में तो नार्थ ईस्ट के भारतीयों पर पहले से ही चीनी , नेपाली , चिंकी–पिंकी , मोमोज जैसी नस्लभेदी टिप्पणीयां होती रही है । अब इस क्रम में कोरोना का नाम भी जुडना लगभग तय है , जो एक बड़ी सामाजिक समस्या के रूप में देखी जा सकती है ।

कोरोना वायरस के कारण संपर्क रहित इंटरफेस इंटरेक्शन बढ़ेगा । होटल , रेस्तरां और हवाई जहाज सहित पारंपरिक एनालॉग व्यवसाय के संकटग्रस्त होने के कारण भौतिक एनालॉग विश्व खत्म हो रहा है । हालांकि इस महामारी के समय प्रौद्योगिकी की मदद से डिजिटल विश्व तेजी से उभरा है । हर कोई घर में बैठा है और दुनिया के साथ उनके संपर्क का माध्यम स्मार्टफोन बन गया है । महामारी के बाद उभरने वाली दुनिया में आज की तरह हर जगह प्रौद्योगिकी होगी और तकनीकी कंपनियां और भी अधिक शक्तिशाली बन जाएंगी और उनका अधिक वर्चस्व होगा । इसमें जूम जैसी छोटी फर्मे और गूगल,एप्पल, फेसबुक और पेपॉल जैसी बड़ी कम्पनियाँ शामिल है । यह बहुत पहले की बात नहीं है जब हम सभी टच स्क्रीन से प्रभावित थे और उसकी मदद से हम काम करने में सक्षम थे । कोविड़ –19 ने हममें से ज्यादातर को उन सभी स्पर्ष की जाने वाली सतहों के प्रति –संवेदनषील बना दिया है जो संक्रमण को फैला सकती है इसलिए कोविड–19 के बाद की दुनिया में, इस बात का अनुमान है कि हमारे पास कम टच स्क्रीन होंगे और अधिक से अधिक वॉयस इंटरफेस और मशीन विजन इंटरफेस होंगे ।

उन परिवारों पर इस महामारी का भयंकर दुष्प्रभाव पड़ेगा जिन्हें इस बीमारी के कारण अपने पारिवारिक सदस्यों को खोना पड़ा । अगर मुखिया को ही खो दिया गया तो परिवार सम्भालने की जिम्मेदारी , बच्चों का वर्तमान और भविष्य सब अनिश्चित हो जायेगा । इस महामारी से मरने वालों की संख्या लाखों ,हजारों में होने के कारण इस का प्रभाव सभी देशों के समाजों पर पड़ेगा ।

महामारी से उत्पन्न सामाजिक परिवर्तनों ने मानव सभ्यता के सामने कुछ मूलभूत प्रश्न खड़े कर दिए हैं । ऐसा नहीं है कि ये प्रश्न हमने स्वयं से पहले कभी नहीं पूछें थे । ये प्रश्न हमेशा हमारे मस्तिष्क में उमडते रहे परंतु इस महामारी के बाद अपने तीव्र वेग के साथ हमारे मानस पटल पर उभरने लगे । आज ये गंभीरता के साथ हमारे सामने उपस्थित हो रहे हैं । शायद हममें से कई ऐसे थे जो बढ़ते उपभोक्तावाद से चिंतित होते थे , मात्र पैसे कमाने को ही जीवन का ध्येय समझ लेने की सोच से असहमत होते थे । पर कहीं ये प्रश्न उनके जीवन की आपाधापी में खो जाते थे । अब परिवार और रिश्तों को ही ले ले । कहीं अवचेतन में हम सभी को लगता था कि शायद हम रिश्तो को इतना समय नहीं दे रहे हैं । बार बार जीवीकोपार्जन के कारण रिश्तों की कोमल भावनाओं को दबाना पड़ता था , भावनाएं मौन हो जाती थी । लॉकडाउन के दौरान रिश्तो में मजबूती आयी । कई वर्षों बाद परिवार के सभी सदस्यों ने एक साथ समय बिताने के अवसर को प्राप्त किया और इस दौरान न जाने कितने भूली बिसरी यादें ताजा हो गई । जीवन की न जाने कितनी ऐसी गलियों से पुनःगुजरे हैं , जिन्हें भूल चुके थे ।

निष्कर्ष

इस महामारी मैं आने वाले कल के संकेत दिए तथा साथ ही प्रकृति के विमुख जाने के दुष्परिणाम दर्शा दिये । हमने जब एक पल ठहर कर स्वयं के जीवन पर दृष्टि डाली तो हम सबको कदीं न कहीं अंदर से यह अहसास हुआ कि हम शायद जीवन में जरूरी और गैर जरूरी बातों का अन्तर है भूल गए हैं । पर यहां निराशा बाद की बात नहीं कर रहे मानव हमेशा आशावादी रहा है । मानव की एक खूबी है कि उसे स्वयं को बदलना भी आता है और कोरोना संकट के बाद हमारे रिश्ते ज्यादा बलवान होंगे । उनमें अधिक मिठास होगा । आज जहां हम सोशल डिस्टेंसिंग और दूरियों की बात कर रहे हैं , वही हम रिश्तो में नजदीकियां की बात भी कर रहे हैं । विरोधाभास है लेकिन सत्य भी है । संकट हमें तोड़ने के लिए आते हैं और हमारा आपस में जुडना हमारी शक्ति बन जाता है ।

एक बड़ा प्रश्न भारतीय संस्कृति पर है चाहे वह अदृश्य हो पर सत्य है । हमारी संस्कृति ने कभी हमें प्रकृति से प्रतिद्वंद्विता करना नहीं सिखाया । हम तो प्रकृ ति के सामने नतमस्तक होते हैं । उसके आदेशों को स्वीकार करते हैं । उस पर विजय पाना हमारा उद्देश्य कभी नहीं रहा । अब कहीं हम यह भी भूल गए और परिणाम स्वरुप हमें मिली कुपित प्रकृति , जिसका प्रकोप हमें झेलना ही होगा । प्रकृति के संकेतों को हमें समझना होगा और सीखना होगा । यहां भी ऐसा लगता है कि हम इस संकट के दौरान जीते हैं । चाहे थोड़े समय के लिए ही सही हमने प्रकृति के साथ अपने रिश्ते पर एक दृष्टि तो डाली है । हम प्रकृति का इसी तरह लगातार शोषण नहीं कर सकते । हमारी नदियों ने हमारे पहाडो ने ,हमारी वायु ने यह कहना शुरू कर दिया था कि ऐसा नहीं चल सकता । मानव को अपने आचरण को सुधारना ही होगा । इनके अलावा अनेक प्रश्न है जो हमारे सामने उपस्थित होंगे । इस महामारी से सीख लेकर के मानव समाज प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करेगा और उसके विमुख जाने की कुचेष्टा से बचेगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *International commitee on taxonomy of viruses (24 august2010) ictv master species list2009 मूल से 2 जून 2020को पुरालेखित ।*
2. *peoples republic of china chinese center of Disease control and prevention 6 फरवरी2020*
3. *कोरोना का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव डॉ. ज्योति सिडाना सहायक आचार्य , समाजशास्त्र विभाग राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)*
4. *कोरोना: सोशल डिस्टेंसिंग क्या है और क्यों है जरूरी?". बीबीसी हिंदी. 19 मार्च 2020.*
5. *"कोरोना वायरस का पहला मामला भारत के केरल में "BBC News हिंदी. 30 जनवरी 2020. अभिगमन तिथि 5 मार्च 2020.*
6. *COVID-19: Indian PM Modi announces complete lock down starting March 25"- Gulf news- मूल से 31 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 अप्रैल 2020.*
7. *13 Mar; 2020; Ist 20:51- "PM Modi bats for joint Saarc strategy to fight coronavirus] gets prompt support from neighbours"- The Times of India (अंग्रेजी में). PTI- मूल से 13 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 March 2020-*
8. *"India declares coronavirus outbreak as a notified disaster"- Livemint (अंग्रेजी में). 14 March 2020- मूल से 15 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 March 2020.*
9. *"Coronavirus outbreak: Govt working on a 'containment plan'"- The Economic Times 6 March 2020. मूल से 19 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 March 2020.*
10. *"21 दिनों तक घर में रहें, PM Modi के आह्वान से बंधी कोरोना से जीतने की आस" दैनिक जागरण. अभिगमन तिथि 25 मार्च 2020.*
11. *"लॉकडाउन में राहत के बाद भी ग्रोथ क्यों नहीं कर पा रही अर्थव्यवस्था? जानें" जनसत्ता. 13 जुलाई 2020. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020*
12. *ष्कोविड–19: भारत में 'लॉकडाउन' से प्रवासी कामगारों पर भारी मार" संयुक्त राष्ट्र समाचार. 2 अप्रैल 2020.*

13. *शर्मा, अभय. "कैसे इस बुरे वक्त में हमारे गांव देश की अर्थव्यवस्था को डूबने से बचा रहे है"- सत्याग्रह. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020.*
14. *घातक कोरोना : एक सामाजिक और आर्थिक विश्लेषण March 30, 2020 डॉ. ज्ञान चन्द जांगिड़, अजमेर (राजस्थान)*
15. *कोरोना´ ग्रामीण भारत और उसकी अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित करेगा संजीव फंसालकर Apr 13] 2020*
16. *कोरोना लॉक डाउन का आदिवासियों पर प्रभाव ज्योति लकड़ा झारखंड http://www-adivasiresurgence-com/*